STEPPING STONE
SCHOOL (HIGH)

CLASS :7

Subject: Hindi Language
Date:10.06.20
Topic: comprehension
Limit:40mins

Worksheet No.:16

[Copy the questions and solve them on a sheet of paper date wise. Keep the worksheets ready in a file to be submitted on the opening day.]

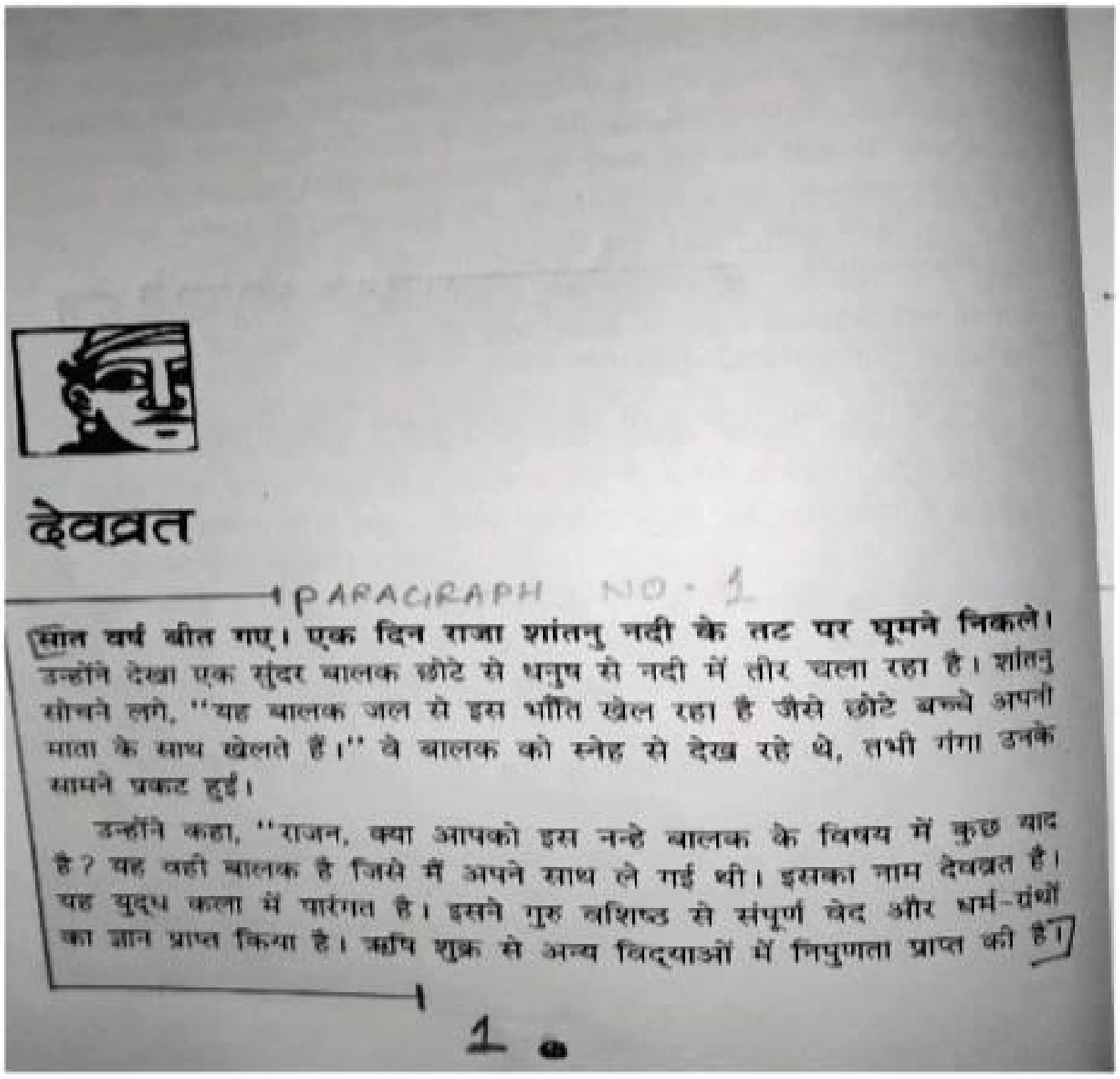

देवव्रत

PARAGRAPH NO. 1

सात वर्ष बीत गए। एक दिन राजा शांतनु नदी के तट पर घूमने निकले। उन्होंने देखा एक सुंदर बालक छोटे से धनुष से नदी में तीर चला रहा है। शांतनु सोचने लगे, "यह बालक जल से इस भाँति खेल रहा है जैसे छोटे बच्चे अपनी माता के साथ खेलते हैं।" वे बालक को स्नेह से देख रहे थे, तभी गंगा उनके सामने प्रकट हुईं।

उन्होंने कहा, "राजन, क्या आपको इस नन्हे बालक के विषय में कुछ याद है? यह वही बालक है जिसे मैं अपने साथ ले गई थी। इसका नाम देवव्रत है। यह युद्ध कला में पारंगत है। इसने गुरु वशिष्ठ से संपूर्ण वेद और धर्म-ग्रंथों का ज्ञान प्राप्त किया है। ऋषि शुक्र से अन्य विद्याओं में निपुणता प्राप्त की है।

1.

Scanned by TapScanner

.....शासन की बागडोर सँभालना यह अच्छी तरह जानता है। यह बालक धनुर्विद्या में भी निपुण है और एक महान शूरवीर सिद्ध होगा।"

PARAGRAPH NO. 2

राजा शांतनु उस सुंदर बालक की ओर देखते रहे। उन्होंने सोचा, "तभी मेरे मन में इस बालक के प्रति स्नेह उत्पन्न हुआ है। यही मेरा उत्तराधिकारी बनेगा। यही मेरी मृत्यु के पश्चात राज करेगा।"

गंगा ने बालक को आशीर्वाद दिया और देवव्रत को उसके पिता राजा शांतनु को सौंपकर चली गईं।

बालक देवव्रत राजा शांतनु की प्रजा में बहुत लोकप्रिय हुआ। वह सुंदर, उदार, विचारशील और चतुर था। शांतनु की प्रजा सदैव यह कामना करती थी कि राजकुमार दीर्घायु हो।

PARAGRAPH NO. 3

कई वर्षों बाद, एक दिन राजा शांतनु शिकार पर गए और वहाँ उन्होंने एक सुंदर, सजीली युवती को देखा। वह युवती मछुआरों के राजा की बेटी थी। उसका नाम था सत्यवती। शांतनु ने मन ही मन विचार किया, "मैं इस सुंदर कन्या से विवाह करना चाहूँगा।" उन्होंने मछुआरे से उसकी पुत्री का हाथ माँगा, परंतु उसने राजा का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। उसने उत्तर दिया, "सत्यवती की संतान आपके राज्य पर कभी शासन नहीं कर सकेगी, क्योंकि आपका पहले ही एक पुत्र है—देवव्रत।"

"यह सत्य है," शांतनु बोले और बोझिल मन से वापस आ गए।

PARAGRAPH NO. 4

देवव्रत ने देखा कि उसके पिता बहुत दुखी रहते हैं। वे अपने मन में प्रश्न करते रहे, "मेरे पिताश्री के दुखी और चिंताग्रस्त होने का क्या कारण हो सकता है?" जब उन्हें इसका कारण विदित हुआ तब वे सोचने लगे, "यदि मेरे पिताश्री सत्यवती से विवाह करना चाहते हैं तो अवश्य करें। मैं उनके पश्चात राजा नहीं बनूँगा। सत्यवती की संतान राज कर सकती है।" देवव्रत माछीराज के पास गए और उन्हें अपने निश्चय के बारे में बताया कि वे राजगद्दी पर अपना स्वामित्व नहीं रखेंगे। माछीराज ने पुनः प्रश्न किया, "राजकुमार, मान लीजिए आपका पुत्र इससे सहमत नहीं हुआ और मेरी बेटी की होनीवाली संतान (नाती) से हस्तिनापुर की राजगद्दी के लिए संघर्ष करने लगा तो?"

Scanned by TapScanner

PARAGRAPH No. 5

देवव्रत ने उत्तर दिया, "नहीं, यह कभी नहीं होगा?" माछीराज ने पुनः प्रश्न किया, "आप यह निश्चय से कैसे कह सकते हैं?" देवव्रत ने गर्जना करते हुए कहा, "माछीराज, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि कभी विवाह नहीं करूँगा। मैं सभी के सम्मुख यह शपथ लेता हूँ कि जब तक मैं जीवित रहूँगा, विवाह नहीं करूँगा।"

देवव्रत की शपथ की गर्जना के साथ ही स्वर्ग से देवता उनपर फूलों की वर्षा करने लगे। पृथ्वी और आकाश में मंद, मधुर स्वर उच्चरित होने लगा, "भीष्म, भीष्म, भीष्म।" और उस दिन से राजकुमार देवव्रत, भीष्म के नाम से विख्यात हुए। राजा शांतनु ने प्रसन्न होकर भीष्म से कहा, "भगवान तुम्हारी रक्षा करें। मैं भी तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि तुम जब तक चाहो जीवित रह सकते हो, और जब तुम चाहोगे तभी मृत्यु को प्राप्त होगे।"

PARAGRAPH No: 6

राजा शांतनु ने सत्यवती से विवाह किया और अनेक वर्षों तक शासन किया। सत्यवती के दो पुत्र हुए, चित्रांगद और विचित्रवीर्य। राजा शांतनु की मृत्यु के बाद चित्रांगद भी शीघ्र ही स्वर्ग सिधार गया। भीष्म ने विचित्रवीर्य को राजगद्दी पर बिठाया और स्वयं प्रतिनिधि के रूप में देश का शासन चलाते रहे। विचित्रवीर्य जब बड़ा हुआ तब भीष्म ने उसके लिए एक योग्य वधू की खोज प्रारंभ की।

इसी समय काशी नरेश ने अपनी पुत्रियों के स्वयंवर का आयोजन किया। उन दिनों स्वयंवर एक महत्त्वपूर्ण समारोह हुआ करता था। इसमें वे सभी राजा-महाराजा और राजकुमार भाग लेते थे जो राजकुमारी से विवाह की इच्छा रखते थे। राजकुमारी स्वयं अपने पति का चयन कर, वरमाला डालती थी। कुछ अवसरों पर प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता था और विजेता राजकुमारी को वधू के रूप में स्वीकार करता था।

PARAGRAPH NO: 7

काशी नरेश की कन्याएँ अंबा, अंबिका और अंबालिका अतिशय सुंदर थीं। अनेक राजा, राजकुमार स्वयंवर में भाग लेकर राजकुमारियों को जीतने की कोशिश में आए थे। भीष्म बहुत शक्तिशाली थे, साथ ही वे धनुर्विद्या में निपुण थे। शीघ्र ही उन्होंने उपस्थित सभी राजकुमारों को परास्त कर दिया और तीनों राजकुमारियों को अपने साथ हस्तिनापुर ले आए। अंबा ने पहले ही मन में निश्चय कर लिया था कि वह शाल्व नामक राजा से विवाह करेगी, परंतु भीष्म शाल्व को भी परास्त कर चुके थे।

Scanned by TapScanner

PARAGRAPH NO : 8

हस्तिनापुर पहुँचने पर अंबा ने विचित्रवीर्य के साथ विवाह करने से इनकार कर दिया और कहा, "मैं पहले से ही शाल्वराज को अपना मन अर्पित कर चुकी हूँ।" अंबा की बात सुनकर भीष्म ने उसे शाल्व के पास पहुँचा दिया। शाल्व अब अंबा से विवाह नहीं करना चाहते थे क्योंकि वे अन्य राजकुमारों के समक्ष भीष्म द्वारा परास्त हो चुके थे। इसपर अंबा ने भीष्म से विवाह का प्रस्ताव रखा, परंतु भीष्म कभी विवाह न करने की शपथ ले चुके थे। उन्हें अंबा की दशा पर दुख हुआ पर वे अपनी प्रतिज्ञा नहीं तोड़ सकते थे। उन्होंने पुनः विचित्रवीर्य से विवाह का प्रस्ताव रखा परंतु विचित्रवीर्य ने यह कहते हुए विवाह से इनकार कर दिया कि जो राजकुमारी किसी और व्यक्ति से प्रेम करती है उससे वे कैसे विवाह कर सकते हैं।

PARAGRAPH NO : 9

इस समस्या को सुलझाने के लिए भीष्म स्वयं अंबा को लेकर शाल्वराज के पास गए और विवाह का प्रस्ताव रखा। पर शाल्व नहीं माने। राजकुमारी अंबा के मन को बहुत ठेस पहुँची। अत्यधिक अपमानित होकर उसने प्रतिज्ञा की कि भीष्म से अपने अपमान का बदला अवश्य लेगी। वह वन में चली गई और एकांतवास में तपस्या करने लगी। उसकी आराधना से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उसे दर्शन दिए और यह वरदान दिया कि अगले जन्म में वह भीष्म का वध करेगी। मरणोपरांत अंबा ने पांचाल की राजकुमारी के रूप में जन्म लिया। उसने घोर तपस्या की जिसके फलस्वरूप उसे पुरुष का रूप मिला और वह योद्धा शिखंडी के नाम से जानी गई। कई वर्षों के बाद कुरुक्षेत्र के युद्ध में, अर्जुन ने सारथी शिखंडी की ओट लेकर भीष्म से युद्ध किया और उनपर विजय प्राप्त की।

Scanned by TapScanner

प्र०: 1 राजा शांतनु ने एक दिन नदी के तट पर क्या देखा तथा गंगा ने उस बालक के विषय में उन्हें क्या बताया ?

प्र०: 2 एक दिन राजा शांतनु जब शिकार पर गए तब उन्होंने वहाँ किसे देखा ? उन्होंने मछुआरे से क्या विनती की तथा मछुआरे ने उन्हें क्या उत्तर दिया ?

प्र०: 3 राजकुमार देवव्रत 'भीष्म' के नाम से कैसे प्रसिद्ध हुए ?

प्र०: 4 काशी नरेश की तीनों कन्याओं के नाम क्या थे ? उनकी कन्याओं के स्वयंवर में भीष्म ने क्या किया

प्र०: 5 हस्तिनापुर पहुँचने पर अंबा ने क्या किया तथा क्यों ?

प्र०: 6 अंबा ने अपमानित होकर क्या प्रतिज्ञा की तथा उसने अपने अपमान का बदला किस प्रकार लिया ?

—X—

Scanned by TapScanner